प्रातिशाख्य एवम् भाषातत्त्व

सुनील कुमार यादव

वैदिक काल में वेद विद्या का अध्ययन–अध्यापन श्रुति परम्परा पर आधारित था उस समय वैदिक ऋचाओं का अध्ययन करके उसको स्मरण रखते थे। ब्राह्मण काल के बाद जब जन भाषाओं का विकास हुआ शनैः शनैः आर्यजन वैदिक मन्त्रों की भाषा से अपरिचित होने लगे। परिणाम स्वरूप वैदिकमन्त्रों का शुद्ध उच्चारण असम्भव हो गया। इसलिये वैदिक स्वर, मात्रा, वर्ण, सन्धि, छन्द, पद–पाठ, क्रम–पाठ आदि का ज्ञान कराने क लिये प्रातिशाख्यों के रूप में भाषा वैज्ञानिक अध्ययन निष्पन्न हुआ। इनमें ऋक्प्रातिशाख्य, तैत्तिरीय प्रातिशाख्य, वाजसनेयि प्रातिशाख्य, अथर्ववेद प्रातिशाख्य तथा ऋक्तन्त्र का अधिक प्रचार हुआ।